विद्यालयी शिक्षा में बच्चों का खेल-खेल में मूल्य संवर्द्धन कैसे हो?

पूर्णिमा पाण्डेय*
दीपा मेहता**

विद्यालय समाज का लघु रूप होता है। विद्यालय बालक-बालिकाओं में मूल्य-संवर्द्धन एवं समाजीकरण की सतत प्रक्रिया का एक सशक्त साधन है। परंतु वर्तमान समय में जिस तरह से आए दिन विद्यालयों में हिंसा हो रही है, इससे संभवतः यह पता चलता है कि हमारे विद्यालय ज्ञान एवं मूल्य के केंद्र न बनकर, मात्र धनोपार्जन, व्यवसाय एवं हिंसा के सूचक बन गए हैं। विद्यालयों में हुई कई घटनाएँ हमारे समाज तथा विद्यालय पर विचारणीय प्रश्न चिह्न खड़ा करती हैं कि, हम अपनी आने वाली पीढ़ी को किस प्रकार की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं? तथा बच्चों का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सांवेगिक एवं नैतिक विकास किस दिशा में हो रहा है? अतः यह लेख प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्य ह्रास की समस्या के कारणों, समाधान तथा उनमें नैतिक मूल्यों के संवर्द्धन हेतु विभिन्न उपायों पर केंद्रित है। इस लेख में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्य संवर्द्धन में माता-पिता, अभिभावकों, शिक्षकों, परिवार, सामाजिक वातावरण एवं विद्यालयी परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका एवं प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही खेल, कहानी, नाटक आदि अन्य क्रियाकलापों एवं गतिविधियों का वर्णन किया गया है, जिसके माध्यम से बच्चों में मूल्य समावेशन किया जा सके।

एक बच्चे की मूल्य शिक्षा उसके घर एवं परिवार से प्रारंभ होती है। ऐसा कहा भी कहा गया है कि बच्चे की प्रथम पाठशाला उसका घर होता है तथा प्रथम शिक्षिका उसकी माता होती है। बच्चे अपने माता-पिता तथा सगे-संबंधियों की आदतों एवं व्यवहारों का अनुसरण करते हैं। वायगोत्सकी, ब्रूनर, पियाजे तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी यही विचार रखा है कि बच्चे अवलोकन एवं अनुसरण द्वारा अपने माता-पिता तथा परिवार के बड़े सदस्यों से सीखते हैं। उदाहरण के लिए, हम देखते हैं कि यदि माता-पिता अपने कार्य में समय की पाबंदी का अनुसरण करते हैं तो बच्चे भी बचपन से ही धीरे-धीरे समय-पाबंदी के गुण को अपनाने लगते हैं तथा बड़े होने के पश्चात् उनके प्रत्येक कार्य में समय-पाबंदी का गुण स्वतः ही परिलक्षित होने लगता है। वहीं दूसरी ओर, यदि परिवार में माता या पिता बच्चों के सामने झूठ बोलते हैं अथवा किसी बड़े-बुज़ुर्ग का अनादर करते हैं तो बच्चों के व्यवहार में भी ऐसे ही लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

* *शोधार्थी,* शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221005
** *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221005

मूल्य-शिक्षा एवं भारतीय समाज

भारतीय संदर्भ में आजकल एकल परिवार अथवा माता-पिता दोनों के कामकाजी होने के कारण, बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक, सांवेगिक एवं नैतिक विकास की प्रक्रिया, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुई है। सामान्यतः कुछ बच्चे अपने माता-पिता तथा बड़े-बुजुर्गों के साथ पारिवारिक परिवेश में न रहकर, गैर-पारिवारिक माहौल में पलते-बढ़ते हैं, जैसे — आवासीय विद्यालयों, छात्रावास, अनाथालाय आदि।

माता-पिता, अभिभावकों तथा सगे-संबंधियों के आचरण के अलावा पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण, बच्चों में मूल्य-संवर्द्धन एवं समावेशन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारिवारिक कलह, आर्थिक स्थिति, माता-पिता के मध्य आपसी मतभेद, आस-पड़ोस का अशांत माहौल, सांप्रदायिक दंगे, लड़ाई-झगड़े, धार्मिक-असहिष्णुता, जातिगत भेदभाव आदि ऐसे कई ज्वलंत कारक हैं, जो कोमल, निश्छल एवं मासूम बाल-मन के चेतन, अवचेतन तथा अचेतन रूप को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक ऐसा परिवार जहाँ आए दिन नशे की वजह से माता-पिता के बीच लड़ाई-झगड़े होते हों, उस परिवार के बच्चों के मन में माता-पिता एवं अन्य लोगों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष एवं घृणा की भावना स्वतः ही घर कर जाती है।

मूल्य संवर्द्धन की प्रक्रिया में शिक्षक एवं विद्यालयी-परिवेश की भूमिका बच्चों की आदतों, व्यवहार तथा आचरण में नैतिक मूल्यों को पोषित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों पर आधारित एक मज़बूत मंच (प्लेटफ़ॉर्म) प्रदान करते हैं। एक बच्चे के लिए विद्यालय ही ऐसा स्थान है, जहाँ वह अलग-अलग समुदाय, जाति, संप्रदाय, धर्म आदि से आए बच्चों से मिलता-जुलता है तथा साथ में समय व्यतीत करता है। विद्यालय विद्यार्थियों को अपनी कक्षा, खेल के मैदान, प्रार्थना-स्थल आदि जगहों पर कैसा आचरण करना चाहिए, दूसरों के साथ समूह में किस प्रकार मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक रहना चाहिए, कोई समस्या आने पर किस प्रकार शांतिपूर्वक समाधान निकालना चाहिए, आपसी मतभेद होने पर भी कैसे सामंजस्यपूर्ण रहना चाहिए आदि सिखाता है।

शुरुआत में, एक बच्चे के लिए ऐसी परिस्थितियाँ बहुत ही चुनौतीपूर्ण होती हैं, क्योंकि उसे ऐसी परिस्थिति में कैसे व्यवहार करना चाहिए, इसकी समझ और ज्ञान का विकास नहीं होता है। वह अन्य विद्यार्थियों के साथ विद्यालयी-परिवेश में रहते-रहते इन सभी परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हो जाता है। बच्चों में धीरे-धीरे विद्यालयी एवं औपचारिक आचार-विचार को अपनाने के साथ-साथ उसके व्यवहार में नीतिगत आचरण स्वतः ही समाहित होने लगते हैं। परंतु मूल्य संवर्धन की प्रक्रिया में यह तभी संभव है, जब हमारे प्राथमिक शिक्षक का आचरण एवं प्राथमिक विद्यालय का परिवेश मूल्यवान एवं नीतिवान संस्कृति पर आधारित हो। साथ ही प्राथमिक विद्यालय की कक्षाओं में ऐसे सृजनात्मक खेल गतिविधियों एवं क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मूल्यों का आत्मसातीकरण एवं समावेशन हो जाए।

प्राथमिक स्तर पर मूल्य संवर्द्धन की प्रक्रिया में खेल गतिविधियों की महत्ता एवं भूमिका

मूल्य संवर्द्धन की प्रक्रिया में खेल गतिविधियों तथा अन्य क्रियाकलापों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से

© NCERT not to be republished

प्रभाव पड़ता है। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास मूल्यों की परिभाषा याद कराने से कदापि नहीं हो सकता, न ही उन पर ज़बरदस्ती अनुशासन के नियमों एवं सिद्धांतों को थोपकर उन्हें मूल्यवान एवं चरित्रवान बनाया जा सकता है। छोटे बच्चों के विकास के प्रत्येक पहलू में, चाहे वह शारीरिक हो, मानसिक हो, सांवेगिक हो अथवा चारित्रिक, खेल गतिविधियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बच्चों की विभिन्न खेल गतिविधियों में अत्यधिक रुचि तो होती ही है, साथ ही सभी बच्चे शारीरिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील और तत्पर भी रहते हैं। अतः विभिन्न प्रकार के समूहों में परस्पर क्रियाशील सहभागिता के कारण उनमें सहयोग की भावना, दायित्व निर्वहन, प्रेम, अहिंसा, नेतृत्व के गुण, ईमानदारी, क्षमा, करुणा, दया, सद्भावना, धैर्य, एकता, सहिष्णुता, सहानुभूति, भाईचारा, सहनशीलता आदि गुणों का विकास होता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध भी हो चुका है कि परंपरागत शिक्षण विधियों द्वारा विद्यार्थी सूचना एवं तथ्यों को रटकर परीक्षा में अच्छे अंक तो प्राप्त कर सकते हैं, परंतु व्यावहारिक रूप से उनमें मूल्यों, सृजनात्मक चिंतन, अभिवृत्तियों एवं कौशलों का विकास नहीं हो पाता। वर्तमान समय में जिस तरह से स्कूली बच्चे एवं किशोर उचित मार्गदर्शन की कमी के कारण अनैतिक आचरण एवं व्यवहार को अपनाते हैं, इसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि बच्चों को घर एवं विद्यालय में अच्छा वातावरण, नीतिपूर्ण व्यवहार एवं उचित मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहे। बच्चों में मूल्यों को समावेशित करने लिए प्राथमिक विद्यालयों में किताबी ज्ञान के अलावा कुछ ऐसी गतिविधियाँ एवं क्रियाकलाप होने चाहिए, जो बालक-बालिकाओं में जिज्ञासा, रुचि, उत्सुकता बढ़ाने के साथ-साथ मूल्यों का भी संवर्द्धन करें।

मूल्य संवर्धन हेतु खेल गतिविधियाँ

विभिन्न सृजनात्मक गतिविधियाँ एवं क्रियाकलाप, बालक-बालिकाओं में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का संवर्द्धन करने में सहायक हैं, जैसे — सर्वप्रथम प्राथमिक स्तर पर बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (थ्योरेटिकल पर्सपैक्टिव) से पूर्व, व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य (प्रैक्टिकल पर्सपैक्टिव) को अपनाना चाहिए। बच्चों को पाठ्यक्रम के बोझ द्वारा उदासीन शिक्षण प्रदान करने के स्थान पर, सृजनात्मक गतिविधियों, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के समावेशन द्वारा विद्यालय एवं कक्षा के वातावरण को सुगम, सहज एवं रुचिकर बनाना चाहिए ताकि बच्चे विद्यालय आने के लिए प्रेरित हों तथा इन गतिविधियों के माध्यम से उनमें मानसिक एवं बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास हो सके।

विद्यालय ऐसा स्थान है, जहाँ सर्वप्रथम बालक और बालिका विभिन्न जाति, समुदाय, धर्म, जेंडर तथा क्षेत्र से संबंधित बच्चों से मिलते-जुलते हैं तथा परस्पर एक साथ, एक कक्ष में कुछ समय व्यतीत करते हैं। अब यह प्रत्येक शिक्षक, चाहे वह जिस भी विषय से संबंधित हो, का परम दायित्व है कि वह कक्षा व विद्यालय की सभी गतिविधियों में प्रत्येक विद्यार्थी की परस्पर सहभागिता सुनिश्चित करे। ताकि विद्यार्थी भिन्न-भिन्न धर्म, समुदाय, जेंडर, रहन-सहन, खान-पान, भाषा आदि से परिचित हो सकें और देश कि विविधता, एकता एवं अखंडता को सहर्ष,

© NCERT not to be republished

बचपन से ही स्वीकार कर सकें तथा बड़े होकर इस एकता को बनाए रखने के लिए सदैव प्रयासरत रहें। अतः छोटे बालकों की परंपरागत शिक्षण की जगह विभिन्न प्रकार के खेलों, व्यावहारिक क्रियाकलापों एवं गतिविधियों में सहभागिता सुनिश्चित कराई जानी चाहिए।

विद्यालय अथवा घर में विभिन्न प्रकार के सामूहिक खेलों एवं गतिविधियों का आयोजन करके बच्चों में मूल्यों का समावेशन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए— बच्चों द्वारा *पंचतंत्र* की कहानियों, नारायण पंडित द्वारा रचित *हितोपदेश* की कहानियों, नैतिक कहानियों, महापुरुषों के जीवन की विभिन्न घटनाओं पर आधारित नाटकों का प्रस्तुतीकरण कराया जाना चाहिए; प्राणायाम, ध्यान तथा विभिन्न योगासनों का अभ्यास कराना चाहिए एवं उसके लाभ के बारे में बच्चों को बताना चाहिए; मानवीय मूल्यों एवं विश्व बंधुत्व पर आधारित प्रार्थना व सभाओं का आयोजन कराना चाहिए; विद्यालय में सामूहिक रूप से वाद-विवाद, संभाषण, कविता वाचन, कहानी का अभिनयकरण आदि गतिविधियों का आयोजन करवाना चाहिए; बच्चों में प्रारंभ से ही परस्पर भोजन, पुस्तक, खिलौने आदि वस्तुओं को मिल-बाँटकर उपयोग करने की आदत विकसित करनी चाहिए; बच्चों को प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों एवं महापुरुषों के जन्मस्थल एवं संबंधित कार्यस्थल पर भ्रमण के लिए ले जाना चाहिए, जिससे बच्चे खेल-खेल में क्षेत्र भ्रमण द्वारा महापुरुषों की जीवनियों एवं कार्यों द्वारा परिचित हो सकें एवं जीवन में प्रेरणा ले सकें।

साथ ही आज के विज्ञान एवं तकनीकी के दौर में छोटे बच्चों के लिए ऐसे मानवीय मूल्य आधारित कार्टून सीरियल्स, वीडियो गेम्स तथा छोटे-छोटे वीडियो क्लिप्स का निर्माण करना चाहिए और उन्हें बच्चों को दिखाना चाहिए, ताकि बच्चों में शांति, सौहार्द, प्रेम, भाईचारा, करुणा, दया, क्षमा जैसे मूल्यों का समावेशन हो सके। कंप्यूटर आधारित कार्यक्रम (कंप्यूटर बेस्ड प्रोग्राम) तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी केंद्रित कार्यक्रम (इंफ़ोर्मेशन एंड कम्यूनीकेशन टेक्नोलॉजी सेंटर्ड प्रोग्राम) द्वारा बच्चों में ईमानदारी, बातचीत करने के तौर-तरीके, संप्रेषण कौशल, अनुशासन, क्रमबद्धता का सम्मान, साहस आदि मूल्यों का विकास किया जा सकता है। विद्यार्थियों में मूल्य संवर्द्धन के लिए प्राथमिक शिक्षकों द्वारा मूल्य-केंद्रित कुछ नवीन शिक्षण विधियों एवं पाठ्यक्रमों का प्रयोग करना चाहिए, जैसे— स्व-अधिगम मॉड्यूल (सेल्फ़-लर्निंग मॉड्यूल), स्व-अध्ययन सामग्री (सेल्फ़-स्टडी मैटिरियल)।

गुलाटी और पन्त (2017) के 'एजुकेशन फ़ॉर वैल्यूज़ इन स्कूल्स—ए फ्रेमवर्क' के अनुसार प्राथमिक स्तर के बालकों को अप्रत्यक्ष रूप से मूल्य शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि बच्चों के व्यवहार एवं आचरण में मूल्यों की आधारशिला स्थापित करने का उचित स्तर, प्राथमिक स्तर ही होता है। इस स्तर के बच्चों में अमूर्त चीज़ों के बारे में समझने, सोचने, रटने आदि की प्रवृत्ति भले विकसित नहीं होती, परंतु उनमें जिज्ञासा, अपने आस-पास के प्रति संवेदनशीलता, अत्यधिक क्रियाशीलता, प्रश्न पूछने एवं उत्तर जानने की तीव्र इच्छा विद्यमान रहती है। अतः बच्चों को कविता, कहानियों, सामूहिक खेल गतिविधियों, अभिनय आदि के माध्यम से शिक्षा दी जानी चाहिए, जो उनकी जिज्ञासा शांत करने के साथ-साथ प्रेरणा एवं सीख भी प्रदान करे। स्विस

© NCERT not to be republished

मनोवैज्ञानिक जीन पियाज़े के अनुसार, छोटे बच्चों में 'आत्मकेन्द्रिता' का गुण पाया जाता है। अतः इसको दूर करने के लिए सामूहिक खेल गतिविधियों में प्रत्येक विद्यार्थी की सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए, जिससे उनके अंदर से 'आत्मकेन्द्रिता' समाप्त होकर, 'हम की भावना' एवं 'एकता' का विकास हो सके। समूह में खेलने से बच्चों में मिल-जुलकर रहने की आदत विकसित होती है। साथ ही वे एक-दूसरे से सीखते हैं तथा अपनी भावनाओं, जैसे—क्रोध, डर, नापसंदगी, उत्सुकता, प्रसन्नता आदि को अभिव्यक्त करते हैं। इन भावनाओं को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ बच्चे अपनी भावनाओं एवं संवेगों को नियमित एवं अनुशासित करना सीखते हैं। बच्चों में दूसरों के सामने सार्वजनिक स्थान पर कैसा व्यवहार करना चाहिए एवं कैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए आदि तौर-तरीकों एवं शिष्टाचार का विकास धीरे-धीरे समूह में सहभागिता करने से होता है। इस स्तर पर बच्चों को उनकी गलतियों पर बार-बार डाँटने की जगह उनके अच्छे व्यवहार एवं आदतों पर सकारात्मक पुनर्बलन देना चाहिए, जैसे—उनकी प्रशंसा करना अथवा उन्हें पुरस्कृत करना।

बच्चों में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के समावेशन तथा राष्ट्र की उत्पादकता बढ़ाने के लिए उनकी अवस्था एवं रुचि के अनुसार विभिन्न प्रकार के सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य (सोशअली यूज़फूल प्रोडक्टिव वर्क— एस.यू. पी.डब्ल्यू.) कराए जाने चाहिए, जिसकी सिफ़ारिश राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा में की थी। विभिन्न धर्मों से संबंधित प्रार्थना सभा का आयोजन, बाल सभा का आयोजन, कला, पेंटिंग, योग, स्वास्थ्य संबंधित जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन, चरखा चलाना, सिलाई-कढ़ाई, बुनाई का कार्य, वृक्षारोपण, संगीत, नृत्य, सामूहिक प्रोजेक्ट कार्य, वृक्षों को खाद व जल देने का कार्य आदि विविध क्रियाकलापों का अभ्यास कराया जाना चाहिए।

बच्चों को कहानी, कविता, लेख के माध्यम से नैतिक कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महापुरुषों की जीवनी, उनके द्वारा दिए गए भाषण व वक्तव्यों पर आधारित श्रव्य-दृश्य सामग्री बच्चों को सुनानी और दिखानी चाहिए, जिससे वे महान व्यक्तियों के जीवन में आए संघर्षों एवं चुनौतियों से परिचित होंगे तथा प्रेरित होंगे। बच्चे महान व्यक्ति की जीवनी एवं उनके आचार-विचार से प्रभावित होकर भविष्य में स्वयं के समक्ष आने वाली किसी भी प्रकार की समस्या का उचित व नैतिक निदान निकालने का प्रयास कर सकेंगे।

जैसा कि '*शान्ति के लिए शिक्षा— राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र*' (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2010) में शिक्षक की भूमिका पर कहा गया है कि, "विद्यार्थियों के लिए अध्यापक आदर्श होते हैं। अगर अध्यापक का शान्ति के प्रति रुझान नहीं है, तो वे अनजाने में हिंसा का दुष्प्रचार करने में भूमिका निभाते हैं। कहा जाता है, जो मैं जानता हूँ, वही पढ़ाता हूँ और जो मैं हूँ, वही सिखाता हूँ।" अतः प्रत्येक शिक्षक, मूल्य शिक्षक होता है क्योंकि प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत होता है। यह केवल नैतिक विज्ञान के शिक्षक का दायित्व नहीं है, अपितु प्रत्येक विषय के शिक्षक का दायित्व है कि वह सामूहिक परिचर्चा, प्रोजेक्ट कार्य, तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, विचार मतभेद होने पर समन्वय बनाए रखने की युक्ति

© NCERT not to be republished

आदि को अपनाकर अपने विद्यार्थियों में व्यापक दृष्टिकोण का विकास करे, जिससे विद्यार्थियों में किसी भी घटना, द्वंद्व या भ्रम की स्थिति होने पर उचित एवं तर्कपूर्ण निर्णय लिया जा सके। उदाहरण के लिए, विद्यालय में एक बच्चा, बुरी संगति वाले बच्चों से मित्रता करने से पूर्व अथवा उनके द्वारा बताए गए गलत कार्यों को करने से पूर्व, तार्किक रूप से सोचकर सही एवं न्यायोचित निर्णय लेगा। साथ ही, व्यापक दृष्टिकोण विकसित होने के कारण व्यक्ति संवेदनशील एवं न्यायपूर्ण बनेगा। इस प्रकार बच्चों में व्यापक दृष्टिकोण का विकास करके उन्हें अपने समाज, पर्यावरण, जीव-जंतुओं एवं प्राकृतिक संसाधनों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है।

जहाँ एक तरफ़ शिक्षा का उद्देश्य ऐसे विवेकपूर्ण मस्तिष्क एवं व्यक्तित्व का गठन करना है, जो समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व के निर्माण व विकास में सहायक हो, वहीं दूसरी तरफ़, शिक्षा में पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का अंधानुकरण करके, प्रतिद्वंद्वता तथा सबसे आगे आने की होड़ को प्रमुख स्थान दिया गया है। परिणामस्वरूप आज के कुछ युवा, मानवीय न बनकर, मशीन बन रहे हैं; धर्म व जाति के आधार पर विभाजित हो रहे हैं; व्यसनों एवं भ्रष्टाचार में लिप्त हो रहे हैं; स्वार्थी, अनैतिक व अमानवीय हो रहे हैं; ऐसे व्यक्तित्व एवं हृदय विकसित हो रहे हैं, जिसके अंदर भावना, नैतिकता, मूल्य एवं संवेदना नहीं है। हमें इस परिप्रेक्ष्य में भारत के महाकवि मैथलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों के गहरे अर्थ को स्वयं भी समझना चाहिए तथा अपने विद्यार्थियों के व्यवहार में आत्मसात कराना चाहिए—

"जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं"

अतः हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करने की आवश्यकता है, जो प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थियों की आदतों, व्यवहार एवं हृदय में दूसरों के प्रति संवेदना, अहिंसा, परोपकार एवं प्रेम की भावना की मज़बूत और अडिग नींव स्थापित कर सके।

जिस तरह से देश में धर्म एवं जाति को लेकर दंगे, मारपीट एवं असंवेदनशील घटनाएँ घटित होती हैं, ये घटनाएँ हमारे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक विकास में अवरोधक हैं। इसके लिए सर्वप्रथम, पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का अंधानुकरण करके, अपनी संस्कृति एवं वातावरण के अनुसार शिक्षा प्रणाली की आधारशिला रखनी चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, विद्यालयी कार्य संस्कृति, गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों एवं शिक्षा नीतियों के मानदंड व मानक सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, जो भारत जैसे बहुभाषी, बहुधर्मी एवं बहुसांस्कृतिक देश का निष्पक्षता, सहिष्णुता एवं उदारता के साथ प्रतिनिधित्व करें। भारतीय समाज की ही तरह विद्यालय की कक्षाएँ भी बहुजातीय, बहुधर्मी, बहुस्तरीय हैं, ऐसी कक्षाओं में बहुसांस्कृतिक शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा को महत्व दिया जाना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों को सभी धर्मों की मूल शिक्षा का सार बताते हुए, उसकी आवश्यकता एवं उपादेयता पर प्रकाश डालना चाहिए। विद्यालय में सभी धर्मों से संबंधित त्यौहारों एवं उत्सवों की महत्ता, उनके विविध स्वरूपों एवं विशेषताओं के बारे में सोदाहरण बताना चाहिए। उदाहरण के लिए, प्राथमिक विद्यालयों में विभिन्न धर्म के बच्चों को अलग-अलग धर्म के त्यौहारों से संबंधित सामान्य जानकारी, खान-पान, वेश-भूषा आदि विशेषताओं

© NCERT not to be republished

पर आधारित क्रियाकलाप का आयोजन करवाना चाहिए। जिससे प्राथमिक स्तर के बच्चों को खेल-खेल में ही विभिन्न धर्मों के बारे में जानकारी प्राप्त होगी, साथ ही उनमें सहिष्णुता, एकता, भाईचारा एवं दूसरों के प्रति सम्मान की भावना का विकास होगा।

प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक बनाने की आवश्यकता है, क्योंकि तभी बड़े होकर उनमें वह संवेदनशीलता, एक ज़िम्मेदार नागरिक के कर्तव्यों को निभाने के लिए प्रेरित करेगी। पर्यावरण से संबंधित भयावह परिणामों एवं तथ्यों को बताकर अथवा प्रदूषण संबंधित समस्याओं के बारे में अवगत कराने मात्र से बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नहीं बनाया जा सकता, अपितु इससे बच्चों में मात्र भय एवं शंका उत्पन्न होती है। प्राथमिक स्तर के बच्चों को पर्यावरण की शिक्षा देने के लिए, उन्हें पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना होगा। उदाहरण के लिए, बच्चों द्वारा वृक्षारोपण कराने के साथ-साथ, उन पौधों का प्रतिदिन निरीक्षण एवं देखभाल करने के लिए कुछ समय का प्रबंध कराना, ताकि बच्चे प्रतिदिन अपने द्वारा रोपित एवं सिंचित पौधों के विकास को देख पाएँ, महसूस कर पाएँ एवं साथ ही उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ पाएँ।

इसी प्रकार बच्चों को जल, वायु, मृदा, पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं आदि के प्रति संवेदनशीलता के साथ जोड़ना चाहिए, जिससे कि बच्चे स्वयं जल, वायु, मृदा आदि को प्रदूषित न करें और न ही इनका दुरुपयोग करें; तथा न ही दूसरों को दुरुपयोग करने दें। प्राकृतिक संसाधनों की उपयोगिता, उसकी मौजूदा मात्रा, दैनिक जीवन में उसकी खपत, संसाधनों की कमी आदि के बारे में विद्यार्थियों को समझाने के साथ-साथ, व्यावहारिक रूप में प्रत्यक्ष उदाहरण सहित दिखाना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण जीवन में आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओं का प्रत्यक्षीकरण कराने के लिए विद्यार्थियों को ऐसे क्षेत्रों में भ्रमण के लिए ले जाना चाहिए, जहाँ वे वास्तविकता से अवगत होने के साथ-साथ इन चुनौतियों के उपायों को ढूँढ़ने के बारे में भी स्व-स्तर से प्रयास कर सकें।

इन सभी गतिविधियों एवं क्रियाकलापों में एक प्राथमिक शिक्षक की भूमिका बहुत ही प्रमुख हो जाती है, क्योंकि यह शिक्षक के ही हाथ में है कि वह इन क्रियाकलापों के निष्कर्ष एवं सीख को बच्चों तक कितना तथा किस प्रकार पहुँचाता है। विभिन्न प्रकार की खेल विधियों एवं क्रियाकलापों का अभ्यास इस प्रकार होना चाहिए कि ये केवल एक दिन का कार्य न होकर, विद्यार्थियों के मन, मस्तिष्क एवं हृदय में स्थायी रूप में संवेदना एवं भावना की ज्योति प्रस्फुटित कर सकें, जो उनके व्यक्तित्व को मूल्यवान, दयावान, त्यागवान तथा उन्हें पूर्ण मानवीय बनाए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थियों का आदर्श होते हैं। अतः मूल्य संवर्द्धन के लिए प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को विभिन्न क्रियाकलापों के द्वारा मूल्य शिक्षा देने के पहले, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मूल्य-केंद्रित पाठ्यक्रम की पुनर्संरचना तथा उनका क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। साथ ही, सेवारत एवं सेवा-पूर्व

© NCERT not to be republished

शिक्षकों के लिए भारतीय संस्कृति एवं विविधता को ध्यान में रखकर व्यावहारिक स्तर पर कार्यशाला, संगोष्ठी एवं क्रियात्मक शोध (एक्शन रिसर्च) जैसे कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर कराया जाना चाहिए। ताकि प्रत्येक शिक्षक, चाहे वह सेवारत हो या सेवा-पूर्व, सर्वप्रथम स्वयं मानवीय मूल्यों का आत्मसातीकरण करने के साथ-साथ मूल्य शिक्षण की योजनाओं, कौशलों, विविध क्रियाकलापों एवं विधियों में स्वयं को प्रशिक्षित कर सके तथा अपने विद्यार्थियों की व्यावहारिक समस्याओं से अवगत हो सके। इस प्रकार के शिक्षक अपने प्रत्येक विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर सकेंगे तथा उनमें भी मूल्य संवर्द्धन एवं समावेशन करने का कौशल विकसित कर सकेंगे।

वहीं दूसरी तरफ़, मूल्य शिक्षण ऐसा कोई विषय अथवा तथ्यात्मक सूचना नहीं है, जिसे मात्र विद्यालय में पढ़ाकर एवं रटाकर प्रदान किया जा सकता है। मूल्य शिक्षा प्रदान करने में शिक्षकों, विद्यालयी परिवेश, कक्षागत गतिविधियों के साथ-साथ माता-पिता, अभिभावकों, सगे-संबंधियों एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्था (राजनैतिक संस्था, सांस्कृतिक संस्था, सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया, फ़िल्म आदि) की भी जवाबदेही बनती है।

निस्संदेह समाज में मूल्यों की गिरावट की समस्या पर शैक्षिक संस्थाओं, शैक्षिक प्रणालियों एवं नीतियों पर प्रश्न चिह्न उठता है। परंतु साथ ही यह प्रश्न चिह्न समाज के प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह युवा, प्रौढ़ अथवा वृद्ध हो, की ओर भी इंगित करता है तथा हमें यह चिंतन करने को उद्वेलित करता है कि हम अपने नन्हें बच्चों के समक्ष कैसा आचरण प्रस्तुत कर रहे हैं और किस प्रकार का आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे छोटे बच्चों का व्यवहार, हमारे स्वयं के आचरण, आदतों एवं व्यवहार को प्रदर्शित (रिफ़्लेक्शन) प्रस्तुत करते हैं। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम सभी चिंतन करें, मनन करें तथा सर्वप्रथम स्वयं के व्यवहार में मूल्यों का आत्मसातीकरण करें; जिससे हमारे आचरण का प्रभाव हमारे विद्यार्थियों एवं बच्चों पर पड़ेगा और स्वतः ही उनमें मूल्यों का संवर्द्धन एवं समावेशन होगा।

संदर्भ

गुलाटी, एस. और डी. पन्त. 2017. *एजुकेशन फ़ॉर वैल्यूज़ इन स्कूल्स — ए फ्रेमवर्क.* डी.ई.पी.एफ़.ई., रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2010. *शान्ति के लिए शिक्षा — राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र.* रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

पॉडकास्ट— भारती के साधक, भारत के महाकवि मैथलीशरण गुप्त. https://hindi.thequint.com/videos/maithilisharan-gupt-rashtrakavi-and-pioneer-of-khari-boli-podcast. से लिया गया है।

https://timesofindia.indiatimes.com/city/lucknow/class-i-boy-stabbed-by-senior-in-school-toilet/articleshow/62549732.cms.

© NCERT not to be republished